मासिक पत्रिका अक्टूबर 2019

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 46678389, 29240762 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	विजय भाटिया
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

नारी-स्वातंत्र्य की दिशा में महर्षि दयानन्द की भूमिका

-डॉ. राखी राजपूत

साभार: आर्यावर्त केसरी, अमरोहा

भारत में अंग्रेजी शासन का सूत्रपात सन् 1757 में प्लासी के युद्ध द्वारा हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप बंगाल पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत की प्रमुख राजशक्ति मुग़ल न होकर मराठे थे और उन्होंने देश के बड़े भू-भाग पर अपना शासन स्थापित किया था। "इस काल में छिन्न-भिन्न होती राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक दशा व सतीप्रथा, पर्दा-प्रथा, जाति-प्रथा, ऊँच-नीच, छुआछूत, बाल-विवाह, बहुर्विवाह आदि कुप्रथाओं का प्रचलन था।" ऐसे में कुछ प्रगतिशील समाज सुधारकों का ध्यान इस तरफ गया और उन्होंने महिलाओं के लिए सराहनीय कार्य किये।

स्वामी दयानन्द के आविर्भाव के समय भारत की स्थिति बहुत खराब थी। 'स्त्री और शूद्र को विद्याध्ययन नहीं करना चाहिए' - यह विचार विकसित होने लगा था। भारत के इतिहास में यह एक नई पद्धति जन्म ले रही थी। ऐतिशायन नामक एक आचार्य ने स्त्रियों के उपनयन तथा विद्याध्ययन के विरुद्ध मत का प्रतिपादन किया था। "समयान्तर में आचार्य ऐतिशायन का मत प्रबल होता गया और महिलाओं की शिक्षा में कमी होने लगी। पहले बालिकाओं का भी बालकों के समान ही उपनयन संस्कार हुआ करता था और वे भी आचार्य कुल में निवास करती हुई भैक्षचर्या से अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति किया करती थीं। परन्तु मनुस्मृति में यह व्यवस्था की गयी कि "कन्याओं का उपनयन तो हो, पर उसमें वे वेदमंत्रों का उच्चारण न करें। कर्मकाण्ड में मंत्रों का प्रयोग स्त्रियों के लिए नहीं है।"

जब कन्याओं के लिए वेदमंत्रों का पाठ भी निषिद्ध था, तो वे वेदों का अध्ययन ही कैसे कर सकती थीं। इसलिए एक समय ऐसा भी आया, जब स्त्रियों को वेदग्रंथ आदि पढ़ना पुराने जमाने की बात होकर रह गई थी और स्त्री एक शूद्र के समान बन गई थी।

ऐसी अवस्था में नारी की अस्मिता दांव पर लगी थी, तब स्वामी दयानन्द ने स्त्री-सुधार के लिए अथक प्रयास किए। शास्त्र रीति से उन्होंने उनको वेद पढ़ने का अधिकार दिया। महिलाओं की महत्ता को जितना उन्होंने वर्णित किया, उतना किसी आचार्य ने नहीं किया। स्वामी जी ने स्त्रियों के महत्व का वर्णन करते हुए कहा है कि "स्त्रियों को भी ब्रह्मचर्य धारण और विद्या का ग्रहण अवश्य करना चाहिए। भारत की स्त्रियों में भूषण, रूपा, गार्गी आदि देवियाँ शास्त्रों को पढ़कर पूरी विदुषियाँ हुई थीं। महर्षि दयानन्द ने कहा था कि "देखो आर्यावर्त के राजपुरुषों की स्त्रियाँ धनुर्वेद, युद्ध विद्या अच्छी प्रकार जानती थीं। यदि ऐसा न होता तो केकैयी आदि स्त्रियाँ दशरथ आदि राजाओं के साथ संग्राम में कैसे जा सकती थीं। क्षत्रियों को व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित और शिल्प विद्या अवश्य सीखनी चाहिए।"

महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के निर्माण में समानता की जिस भावना को सम्मिलित किया, वह विभिन्न समाजों के संगठन और उनके प्रचार कार्य में अत्यधिक सफल सिद्ध हुई। आर्यसमाज की सफलता का मंत्र उनकी धार्मिक कट्टरता थी। आर्य समाज का कार्य सामाजिक क्षेत्र में बहुत सफल रहा। उसने नारी वर्ग को उस कैद से छुड़ाया, जिसे धर्म के नाम पर उस पर थोप दिया गया था। महर्षि दयानन्द व उनके आर्य समाज ने हिन्दू समाज में व्याप्त हो रही बाल-विवाह, बहु-विवाह, पर्दा-प्रथा, जाति-प्रथा, सती-प्रथा आदि तमाम कुरीतियों का विरोध किया। स्त्री शिक्षा, जाति-समानता एवं पुनर्विवाह को सामाजिक मान्यता प्रदान की, जिससे एक तरफ

तो सतीप्रथा को कमज़ोर किया गया और दूसरे, समाज में महिलाओं को सम्मान का एक मार्ग प्राप्त हो सका।

जिस युग में यूरोप जैसे विकसित देशों में भी औरतों को वोट देने का अधिकार नहीं था, ऐसे समय में भी महर्षि दयानन्द ने यह सिद्ध किया कि राज्य के शासन में भी महिलाओं को पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करना चाहिए। देश की रक्षा, न्याय, युद्ध एवं शासन में पुरुषों के समान उन्हें भी राज्य के कार्यों में हाथ बंटाना चाहिए। इस संदर्भ में वे कहते हैं कि "जैसी राजनीति-विद्या को राजा पढ़ा हो, वैसी ही विद्या उसकी रानी को भी पढ़ी होना चाहिए। स्त्रियों का स्त्री और पुरुषों का पुरुष राजा न्याय करे।"

महर्षि दयानन्द ने न केवल महिलाओं को शिक्षित ही किया, बल्कि उन्हें वेदों का अध्ययन करने के लिए भी प्रेरित किया, जिनका तत्कालीन समय में केवल पुरुष वर्ग ही अध्ययन करता था। वे महिलाओं को युद्ध लड़ने केलिए भी प्रेरित करते थे, क्योंकि जब पति युद्ध करने जाता था तो पति को अगर आवश्यकता महसूस हो तो वह एक अच्छे सेनापति की तरह उसका साथ दे। महर्षि दयानन्द ने महिलाओं को शासन-कर्म में और युगकर्म में प्रणीत होने के लिए प्रेरित करते हुए कहा है कि-"संग्राम में राजा के अभाव में रानी सेनापति हो और जैसा राजा युद्ध करने में वीरों को प्रेरणा दे, वैसे ही वह भी आचरण करे।" परम्परागत व रूढ़िवादी दृष्टिकोण का त्याग करके स्वामी दयानन्द ने महिलाओं की शिक्षा पर विशेष रूप से जोर देकर और उन्हें सशक्त बनाकर निश्चित रूप से एक क्रान्तिकारी कदम उठाया था। महिलाओं और पुरुषों में उन्होंने कोई अन्तर न करके महिलाओं और पुरुषों की समान शिक्षा पर अनिवार्यता दिखाई।

आर्य समाज ने सारे भारत में अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना करके सभी जातियों की महिलाओं की शिक्षा के लिए द्वार खोल दिए। इन संस्थाओं से शिक्षा ग्रहण करके भारतीय समाज के हर तबके, विशेषकर महिलाओं और शूद्र वर्ग में नव चेतना का संचरण हो उठा। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय नारी की खोई अस्मिता पुन: वापस लौटने लगी और भारतीय महिलाएं, प्राचीन भारतीय नारी के स्वर्णिम इतिहास से प्रेरणा लेकर स्वयं भी अपने अधिकारों के प्रति सजग हो उठीं। अब मध्यकाल और स्मृतिकाल एवं पौराणिक काल की निरी अबला नारी सबला होकर बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सब तरफ पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती नज़र आने लगी। महर्षि दयानन्द ने महिलाओं को राजनीतिज्ञा और शासिका के रूप में मान्यता प्रदान की, जिससे वह महारानी बनकर शासन करने वाली रानी तो बनी ही, अपितु हर क्षेत्र में पुरुषों से अच्छा शासन कर रही है। महिलाओं की राजनीतिक स्थिति को व्यक्त करते हुए स्वामी दयानन्द कहते हैं कि "जो राजकुल की स्त्री पृथिवी आदि के समान धीरज आदि गुणों से युक्त हो, तो वही राज्य करने योग्य होती है।"

निश्चित ही घर की चारदीवारी में कैद रहने वाली महिलाओं को राजनीतिक अधिकार सौंपकर स्वामी दयानन्द ने एक क्रान्तिकारी कदम उठाया था। स्वामी दयानन्द ने महिलाओं को इस दयनीय एवं दीन-हीन स्थिति से उबारकर उन्हें ऐसी शक्तियाँ प्रदान की कि "वे बड़ी सफलतापूर्वक क्षात्र धर्म का निर्वहन करते हुए योद्धाओं के रूप में आ खड़ी हुई और अनेक असम्मानों को झेलने से बच गई।" महिला को योद्धा और स्त्रियों की सेना के साथ खड़ाकर वस्तुत: दयानन्द ने अभूतपूर्व रूप में भारतीय नारी को इतने अधिकार सौंपे हैं, जितने कि शायद ही संसार में कोई समाज सुधारक या चिंतक ने पहले दिए हों। इस प्रकार स्पष्ट होता है कि ऐसा कोई भी कार्यक्षेत्र बकाया नहीं रहा है, जहाँ महर्षि दयानन्द ने महिलाओं को उसके शीर्ष स्थान पर न बैठाया हो। उन्होंने किसी भी रूप में नारी को पुरुष से कम नहीं आंका है। जिस कार्य को पुरुष न कर सकता था, उसे नारी आज पूरी तत्परता से कर रही है। इसलिए महर्षि हर स्थान पर नारी द्वारा पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करने का वर्णन करते हैं। ■■

मन मुटाव - तनाव और दु:ख का कारण बनता है

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध समाज सेवी बाबा आमटे को बचपन में एक मित्र ने उनसे ऐसी बात कह दी, जो उन्हें बहुत बुरी लगी। बाबा आमटे ने उससे बोलना ही छोड़ दिया। जब यह बात उनकी माता जी ने सुनी तो एक दिन आमटे को एक बगीचे में ले गई, जहाँ पतझड़, के कारण पेड़ों के गले सड़े-पत्ते नीचे पड़े हुए थे। उन पत्तों को दिखाते हुए माता ने पुत्र आमटे से कहा कि जिस प्रकार ये पुराने पत्र अनायास वृक्षों से गिर रहे हैं, उसी प्रकार हमें अपने मन के पुराने पत्रों-मन-मुटाव, जलन, ईर्ष्या, द्वेष आदि को भी अपने व्यक्तित्व से निकाल देना चाहिए, क्योंकि ये तनाव और दु:ख का कारण तो बनते ही हैं, हमारी प्रगति में भी बाधक बनते हैं। माता के इन शब्दों को सुनकर बालक आमटे को अपनी भूल महसूस हुई। वह तुरन्त अपने मित्र के पास गए और उससे अपनी गलती के लिए क्षमा-याचना की तथा उससे सदा स्नेहपूर्ण व्यवहार करते रहे।

अक्टूबर 2019 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
06	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	समाज में विजय दशमी का महत्व।
13	डॉ. विनय विद्यालंकार (7906725688)	सत्यार्थ प्रकाश पर एक विहंगम-दृष्टि।
20	डॉ. महेश विद्यालंकार (011-47064357)	श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम क्यों कहा जाता है?
27	श्री वासुनित (9015886225)	सुमधुर भजन

सितम्बर मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती संतोष मुंजाल	36,000/-	श्री ध्रुव बहल	2,100/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
श्री विद्या सागर सरीन	11,000/-	श्री समीर कपूर	2,100/-	श्रीमती चंदू सुमानी	1,000/-
श्री रमन कुमार मेहता	6,300/-	डॉ. विनोद मलिक	1,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्री करण अरोड़ा	5,100/-	श्री एस.एल. आनंद	1,100/-	श्री आदित्य बहल	1,000/-
श्री राजीव भटनागर	5,100/-	श्री एस.सी. गर्ग	1,100/-	श्री के. कौल एवं परिवार	700/-
श्री जे.आर नंदा	5,000/-	श्री राजीव चौधरी	1,100/-	श्रीमती शशि भंडारी	500/-
श्री प्रबोध चन्द्र गुप्ता	3,000/-	श्री हरदीप कपूर	1,100/-		
श्रीमती चंद्रप्रभा खांडपुर	2,500/-	श्री विजय भाटिया	1,000/-		

पुरोहित द्वारा एकत्रित धनराशि : ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹ 3,400/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

- ❖ श्रीमती वीणा नंदा 11,00,000/-
- ❖ श्रीमती पूनम ओमकुमार 50,000/-
- ❖ ग्रेटर कैलाश सतसंग समाज 11,000/-
- ❖ श्रीमती रक्षा पुरी 1,00,000/-
- ❖ श्रीमती मोनिशा कृष्णा 50,000/-
- ❖ श्री सुरिन्दर प्रकाश मेहता 10,000/-

अन्य दान : ❖ श्री आर.के. तनेजा : 1 Walker

❖ M/s NRI Health Aid C/o Sh. Kamal Gandhi :
(i) 2460 - TAB Azithromyein, 500 MG (ii) 600 - TAB Rzole DSR 40 MG,
(iii) 1000 - TAB Rzole 20 MG (iv) 1600 - TAB Nicopenita 40 MG

हंसते रहो, नहीं होगा तनाव

तनाव में रहने से मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य पर असर पड़ता है। हाई ब्लड प्रेशर, माइग्रेन, सिरदर्द, अल्सर, एलर्जी, अस्थमा, कैंसर और हृदय रोग जैसी बीमारियाँ तनाव की ही देन मानी जाती हैं।

इन्हें आजमाएँ-

- ❖ सुबह जल्दी उठकर थोड़ा समय व्यायाम के लिए निकालें।
- ❖ दिनचर्या में ऐसी चीजों को शामिल करें, जिनसे आपको खुशी मिलती हो। मसलन, डांस, गाना, टहलना, प्रार्थना, चिड़ियों को देखना, फोटोग्राफी, फिल्में देखना या तैरना।
- ❖ नकारात्मक चीजों से दूर रहें। जब भी आपको लगे कि तनाव आपको घेर सकता है तुरंत सोच की दिशा बदल दें। मन अस्थिर हो तो ध्यान, अध्यात्म और प्राणायाम में आपकी मदद करते हैं।
- ❖ यदि आप अपनी समस्या किसी से बांटना नहीं चाहते तो उसे डायरी में खुलकर लिखें।

लाला दीवान चन्द जन्मदिन स्मृति हवन

मंगलवार, 24 सितम्बर 2019 को स्वर्गीय लाला दीवान चन्द जी का जन्मदिन, आर्य समाज की यज्ञशाला में यज्ञ के माध्यम से मनाया गया। इस अवसर पर लाला दीवान चन्द ट्रस्ट के वाईस चेयरमैन, श्री एस.सी. पुरी, श्री अनिल कुमार-एक्सीक्यूटिव ट्रस्टी, डॉ. (श्रीमती) चारु वालिया खन्ना- ट्रस्टी, श्री राजेन्द्र गुप्ता-ट्रस्टी और श्री योगेश मुन्जाल-ट्रस्टी उपस्थित थे। यज्ञ के पश्चात, ट्रस्ट की ओर से अमृत पॉल आर्य शिशु शाला के 500 बच्चों को पैकेट लन्च दिया गया। अन्त में सभी उपस्थित अतिथियों के लिए पुस्तकालय में आर्य समाज की ओर से जलपान की व्यवस्था थी।